ओमशांति। मीठे–2 मात–पिता के बच्चों ने गीत सुना। अब उस मात–पिता को पतित–पावन तो कहते ही हैं। बच्चे जानते हैं कि जन्म–जन्मांतर के पापों की गठरी उतरनी है। कैसे? सिर्फ मात–पिता को याद करने से। पुकारते शिवबाबा को ही है। गुह्य ते गुह्य राज़ बाप समझाते रहते हैं। बच्चे वर्सा लेना है बाप से; परन्तु जब तक एडॉप्ट न करे, मुखवंशावली न बनावे, तो बच्चे कैसे कहलावें! भक्तिमार्ग वाले तो सिर्फ गाते हैं, तुम यहाँ सन्मुख बैठे हो। बाप कहते हैं, अब मैं आया हुआ हूँ तुम्हारे जन्म–जन्मांतर की गठरी उतारने की राय देने, श्रीमत पर चलाने। यह बाबा नहीं कहते हैं, शिवबाबा कहते हैं, मेरे लाडले, सिकीलधे बच्चे! समझते हो, बरोबर पतित–पावन बाप ही पापों (की) गठरी उतारने का मार्ग अथवा पतित से पावन बनने का मार्ग बताते हैं। जैसे सुभाष मार्ग, नेहरू मार्ग नाम रखते हैं न! यह है पतित से पावन बनने का मार्ग। बाप कहते हैं– मीठे–2 बच्चे, मैं तुमको मार्ग बताने आया हूँ। मनुष्य, गुरु लोग से शांति–सुख का मार्ग पूछने जाते हैं; परन्तु वह क्या जानें! पुकारते रहते हैं– हे पतित–पावन आओ, आकर पतित से पावन बनाने का मार्ग बताओ। अच्छा मार्ग है न! कौन बताते हैं? बिलवेड मोस्ट बाप। साधु आदि साधना करते हैं मुक्ति में जाने लिए; परन्तु जाए नहीं सकते। जब पतित दुनिया होती है तब ही पावन दुनिया का मार्ग बताने बाप को आना पड़ता है। कोई भी मनुष्य मुक्ति–जीवनमुक्ति का मार्ग बताय न सके। तो श्रीमत पर चलना चाहिए। सब संग तोड़ना है। सर्वधर्मान् परित्यज.... देह के जो भी धर्म हैं सब छोड़ अपन को आत्मा समझो। मैं फलाना हूँ, यह मिल्कियत है, यह सब छोड़ अपन को आत्मा समझो और निरंतर पुरुषार्थ करो। मेरे को याद करो, मैं शुभ मार्ग बताता हूँ। इनसे शुभ मार्ग कोई होता नहीं। अब यह दुःख का नाटक पूरा होता है, क्या अजन यहाँ पार्ट बजाना चाहते हो? क्या तो(तुम) और ही दुखी होंगे! यहाँ कोई भी मनुष्य सुखी नहीं है। अकाले मृत्यु आदि आते हैं। कोई एकर विरला बड़ी आयु वाले होते हैं, बाकी तो रोगी बन पड़ते हैं। बाप कहते हैं, मैं गाइड बनकर आया हूँ। अब मात–पिता को याद करो। श्रीमत पर चलने से तुम्हारे ऊपर.... इतनी आशीर्वाद होती है, जो तुम सौभाग्यशाली बन जाते हो। बाप कहते हैं तुम विश्व के मालिक बनने वाले हो। बेहद बाप से विश्व का मालिकपना लेना कोई कम बात थोड़े ही है! पैसे के लिए कितना ठगी आदि करते। यहाँ ऐसी कोई बात नहीं। बाप कहते हैं, मुझे याद करो तो सदैव के लिए निरोगी बन जाएँगे। 21 जन्मों लिए कितना भारी वर्सा देते हैं! ऐसे बाप से भक्तिमार्ग में प्रतिज्ञा करते आए हो, तुम पर कुर्बान जावेंगे, बलिहार जावेंगे, फिर आपसे स्वर्ग का वर्सा लेंगे। अब तुम जानते हो, अपने मोस्ट बिलवेड बाप के सामने बैठे हैं। बाप निराकार, निरंहकारी गाया हुआ है। कितना ऊँच ते ऊँच बाप है! जब भक्ति पूरी होती है तब भक्ति का फल देने लिए मैं आता हूँ। वह भी बतलाते हैं, मेरे सच्चे–2 भक्त कौन हैं– जो पहले–2 पूज्य थे, भगवान–भगवती थे, फिर ऊपर से नीचे आए हैं, सतो–रजो–तमो में आते–2 अब बिल्कुल ही जड़जड़ीभूत हो गए हैं। तुम जानते हो हम सो विश्व के मालिक थे। भारत की बड़ी महिमा; इसलिए भारत को मदद करते हैं। जानते हैं, यह भारत मुरब्बी है, प्राचीन पहली बिरादरी है। भारत पहले बहुत–2 साहुकार था, अब गरीब हो गया है तो सबको तरस पड़ता है। भारत को बहुत गरीब समझ कर मदद करते हैं। कोई बहुत साहुकार होते हैं और फिर गरीब बन पड़ते हैं, तो इनको दान आदि देने लिए सबको दिल होती है। बाप भी कहते हैं, भारतवासी कितने मूँझे हुए हैं, शिव जयन्ती मनाते हैं; परन्तु जानते नहीं शिवबाबा कब आया, क्या आकर किया। ज़रूर बाप वर्सा ले आया होगा, स्वर्ग का मालिक बनाया होगा। कहते हैं, बच्चों को सदा सुखी बनाय, तख्त दिलाए

मैं वानप्रस्थ में चला जाता हूँ। मैं कोई तमन्ना नहीं रखता हूँ विश्व का राज्य पाने लिए। मैं मालिक नहीं बनता हूँ। ऐसे बिलवेड बाप को कैसे पकड़ना चाहिए! हाथ से पकड़ने की बात नहीं, बुद्धि की याद से पकड़ना है। सबको अपने घर–गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, बच्चों की पालना करनी है। यह है बेहद का सन्यास, देह सहित जो कुछ हैं उनको छोड़ना। यहाँ हर एक चीज़ जड़जड़ीभूत, तमोप्रधान है, दुःख देने वाले हैं। तत्व भी दुःख देते हैं– वर्षा न पड़े, फैमिन हो जाता है, बाढ़ आ जाती है। वहाँ भी यह तत्व आदि सब तुम्हारे अरदली में रहेंगे, पाँच तत्व भी तुम्हारी अवज्ञा न करेंगे। अभी तुम बच्चे बाप से दुआएँ ले रहे हो। दुआएँ मिलेंगी श्रीमत पर। बाप की श्रीमत पर मददगार बनो, फिर मुझे याद करो, पवित्र रहो कमल फूल समान, बस। याद से ही तुम इस भारत को स्वर्ग बनाए देंगे। बाप कहते हैं, तुम सिर्फ पवित्र बनो। ऐसे नहीं, सब मनुष्य अंगुली देंगे। जो कल्प पहले श्रीमत पर बाप के मददगार बने हैं, वही बनेंगे। यह फखुर होना चाहिए, हम प०पि०प० के राइट हैंड बनते हैं। राइट हैंड बनने से पूरा राइटियस बन जावेंगे, विजयमाला में पिरोए जावेंगे। है बहुत सहज, इसमें कोई हठयोग आदि नहीं कराते हैं। नाटक अब पूरा हुआ, 84 जन्मों का पार्ट पूरा हुआ, अब छीः–2 कपड़ा छोड़ना है। अब मुझे याद करते, शांतिधाम में आए निवास पड़ेंगे, फिर तुमको सुख के संबंध में भेज देंगे। बरोबर हम आत्माएँ वहाँ से ही आती हैं। वह स्वीटहोम को सब भूल गए हैं। अगर याद हो, दुख आए, एक शरीर को छोड़ भाग जावे स्वीट होम। मनुष्य काशी कलवट खाते हैं। समझते हैं, यहाँ दुख है, हम जाते हैं शिव के पास; परन्तु शिवबाबा पास तो कोई पहुँच नहीं सकते। यहाँ तो तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम कमाई करते हो। पहले बाबा के बच्चे बनते हो, बाबा पढ़ाने शुरू करते हैं, फिर तुमको वापिस ले जाए, फिर स्वर्ग में भेज दूँगा। ब्रह्मा की आयु कितनी है, वह भी लिखा हुआ है। ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु में खत्म हो जाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ चाहिए न। तुम समझाय सकते हो, हम हैं बी०के०कुमारियाँ। ब्रह्मा है शिवबाबा का बच्चा। शिवबाबा हमारा डाडा है। वर्सा डाडे से मिलता है। वह है स्वर्ग का रचता, उनसे ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इसलिए बाबा की मत पर चलना है, उनसे आशीर्वाद लेनी है। बच्चे ही आशीर्वाद लेने के हकदार रहते हैं, कपूत नहीं। तो बाप कहते हैं– लाडले बच्चों, आप सपूत बनो, बाबा का हाथ पूरा पकड़ लो। तुमको बहुत आराम से ले जाते हैं; जैसे तारू तैरना सिखाते हैं न! बड़े आराम से सीखते हैं। बाबा भी बिल्कुल सहज रीति उस पार ले जाते हैं। सभी आत्माओं को पर मिल जाते हैं। तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना उड़ने के पर मिलते जावेंगे। सज़ा खाने वाले थोड़े ही ऊँच पद पावेंगे। श्रीमत पर चलो फिर सज़ा के लायक न बनेंगे। पास विथ ऑनर होने में पुरुषार्थ करना चाहिए। मम्मा–बाबा के ऊपर भी जीत पानी होती है न। बाप बार–2 कहते हैं– बच्चे, बाप से मुख कब न मोड़ना। आपस में झगड़ा तो बहुत जगह होता है– कोई सेन्टर स्थापन करते, कोई जिज्ञासु रूठ जाते। सम्पूर्ण तो कोई बने हैं नहीं, कोई न कोई खिटखिट होती है। कभी भी बाप को नहीं छोड़ना है। कुछ भी खिटखिट हो तो बाप की गोद में आकर बैठो– बाबा, हम आपके हैं, आपसे वर्सा लेते हैं। गृहस्थ व्यवहार को भी सभांलना है। यह कोई वह सन्यास नहीं है। बच्चों को रचा है, उनकी पालना भी तुमको करनी है। उनमें भी कपूत और सपूत ज़रूर होंगे। कपूत बच्चे सबको तंग करेंगे। बाप कहते हैं, तुम सबको पारलौकिक बाप का परिचय दो। बोलो– "ओह गॉड फादर!" कहते हो, फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता! कहते ही हैं– पतित–पावन गॉड फादर, तो ज़रूर पतित दुनिया है और पावन दुनिया भी है। सभी आत्माओं का बाप वह एक है। अभी तुम जानते हो, उस बाप के सामने बैठे हैं, जो हमको पतित से पावन बनाए आशीर्वाद देते हैं– चिरंजीव रहो। वहाँ तुमको काल खाए नहीं सकते। तो बाप कहते हैं, श्रीमत पर चलो, सबको सुख दो। बाप आए ही हैं सभी को बहुत सुखी बनाने। शांति और

सुख, दोनों का वर्सा देते हैं। वहाँ तो माया ही नहीं, तो दुख कहाँ से आए! यहाँ तो एक/दो से लड़–झगड़ मारते रहते हैं। बाप आए हैं सुखधाम–शांतिधाम का मालिक बनाने। इसके लिए तुम पढ़ते हो। बाप ने सभी प्रबंध रखे हैं। है तो सब बच्चों का ही। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा सर्वेन्ट हूँ। बच्चे कहते हैं, शिवबाबा हमारे नाम पर मकान बनवाए लेना। अच्छा, जो हुक्म। बाप भी कहते हैं, जो हुक्म बच्चों का। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा तुम्हारे लिए ही बनवाए रहे हैं। सब कुछ शिवबाबा करते रहते हैं। बाबा ने कहा है, चिट्ठी भी लिखो तो शिवबाबा **c/o** ब्रह्मा। शिवबाबा को याद करने से कितने पाप कटते होंगे! बहुत कटते हैं। बाबा युक्तियाँ बतलाते रहते हैं। शिवबाबा **c/o** ब्रह्मा, यह टेव पड़ जानी चाहिए। बहुत सहज है। नाम ही है सहज राजयोग और ज्ञान। बाप है ज्ञान सागर, नॉलेजफुल। सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ बतलाते हैं। वह भी सेकेण्ड की बात है। अब भारतवासियों पर बृहस्पति की दशा बैठती है। अब भी है राहू की दशा। तो बाप से दुआएँ ले लो तो तुम्हारे पाप की गठरी उतरी। माम् एकम् याद करने की प्रैक्टिस करो। उठते–बैठते, चलते–फिरते बाप कहते हैं, मुझे मोस्ट बिलवेड को याद करो। तुमको कैसा वर्सा देता हूँ! माँ–बाप से दुआएँ लेने का निमित्त बनना चाहिए। इस (ब्रह्मा) ने भी लौकिक बाप की बहुत दुआ ली है, बाप की बहुत सेवा की है। पिछाड़ी में कहा– काशी में निवास कराओ। अच्छा, बाबा चलो। वहाँ बिठाए नौकर–चाकर रख दिए। वहाँ ही उनकी मनोकामना पूरी हुई। बाबा की आशीर्वाद मिली न! सबकी सर्विस की तो सबकी आशीर्वाद मिली। मात–पिता की आशीर्वाद झड़ती है। अभी है बेहद की बात। इसलिए सपूत बच्चे बन आशीर्वाद लेने श्रीमत पर चलते रहो और सबको मार्ग बताओ। भारतवासी स्वर्ग के मालिक बनते थे। अभी बाबा आया है वर्सा देने। कहते हैं, सिर्फ मुझ बाप को याद करो और किसके नाम–रूप में नहीं फँसाना हैं। देही–अभिमानी बन बाप को याद करो तो बेड़ा पार हो जावेगा। तुम मात–पिता, हम बालक तेरे.... अब वह मात–पिता सामने बैठे हैं। बाबा बरोबर कल्प पहले भी आप आए थे। कल्प–2 आप ऐसे ही आते हो, यह हम जानते हैं, और कोई नहीं जानते। तुम 84 जन्मों के चक्कर को जान गए हो। अभी बाप की आशीर्वाद लेने में भूल न करो। यह बड़ी जबरदस्त आशीर्वाद है बाबा की। लौकिक बाप तो खुद सुख लेकर फिर बच्चों को देते हैं। यह बाप आकर बच्चों को विश्व का मालिक बनाए, खुद निर्वाण धाम में बैठ जाते हैं। वह खुद इस सृष्टि का सुख लेते नहीं है। अच्छा, बाप कहते हैं विस्तार से क्या सुनाऊँ! थोड़ी सी बात सिर्फ समझ लो, तुम भूल जाते हो, गाँठ बाँध लो। मनुष्य कोई बात याद रखने लिए गाँठ बाँध लेते हैं, तो भी भूलना न है। तो यह भी भूलना न है। सेन्टर खोलने वालों को कितनी आशीर्वाद मिलती है, स्वर्ग के फाउंडर को कितना सब याद करते हैं– ओह गॉड फादर सिटी। आज भी वह है सर्व का सुख–शांति दाता। बाप कैसे बैठ बच्चों की सेवा करते हैं, कितना ऊँच ते ऊँच हैं और बैठे कैसे हैं! कितनी इनकी महिमा होती है। सिकीलधे बच्चों को कितना ऊँच बनाते हैं। कोई को भी पता न पड़ता, बाप इन्हों को क्या बनाते हैं। बाप बच्चों की सेवा में उपस्थित है, बहुत निरहंकारी हैं। बच्चे किस्म–2 के हैं, तो भी कहते हैं– भावी ऐसी बनी हुई है। बाप कहते हैं, मेरी एक्ट हूबहू कल्प पहले मुआफिक चलती है। गांधी अथवा नेहरू आदि भी चाहते थे कि वन ऑलमाइटी अथॉरिटी गवर्मेन्ट हो। अब वह कार्य बाप कर रहे हैं। आहिस्ते–2 जानते जाएँगे; परन्तु ज़रा टू लेट होती जावेगी। कर्मातीत अवस्था हुई तो यह शरीर न रहेगा। पिछाड़ी में आने वालों को बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा और ऐसे भी पिछाड़ी में जाने वाले बहुत तीखे जाते हैं। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को बापदादा, मीठी माँ का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ

यहाँ मानसून के कारण ठंडी आरम्भ हो गई है; इसलिए मधुबन आने वाले बिस्तरे और ... वस्त्रों की ..... रखें।